International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in July 2021, iajesm2014@gmail.com

"माध्यमिक स्तर पर छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर इलाके का प्रभाव"

चंद्र शेखर कुमार (शिक्षा), शिक्षा विभाग, अनुसंधानकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ. नीरज तिवारी (शिक्षा), सह - प्रोफेसर (शिक्षा विभाग), सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर स्थानीयता के प्रभाव का पता लगाना है। स्टडी ओरिएंटेशन स्कोर प्राप्त करने के लिए मेवात जिले (हरियाणा) के विभिन्न स्कूलों में दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले 360 छात्रों के नमूने पर एक संशोधित स्टडी ओरिएंटेशन स्केल (एसओएस) का उपयोग किया गया था। इसी प्रकार, कक्षा IX की स्कूल स्तर की परीक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों के माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धि को मापा गया। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम बताते हैं कि शहरी और ग्रामीण छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण औसत स्तर का है। शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण थोड़ा बेहतर है। अध्ययन से यह भी पता चला कि माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

कुंजी शब्द: अध्ययन अभिविन्यास, माध्यमिक विद्यालय, शैक्षणिक उपलब्धि, स्थानीयता

1. परिचय

शिक्षा को व्यक्तियों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है, और छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण उनकी शैक्षणिक सफलता और भविष्य की संभावनाओं को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन अभिविन्यास छात्रों के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और विश्वास को संदर्भित करता है, जो उनकी प्रेरणा, जुड़ाव और समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है।

इस संदर्भ में, छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता है। भौगोलिक स्थिति जिसमें छात्र रहते हैं, उनके अनुभवों और दृष्टिकोणों को कई तरह से आकार दे सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के पास अधिक उन्नत शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच हो सकती है, जैसे अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालय, आधुनिक सुविधाएं और उच्च प्रशिक्षित शिक्षक।इसके अलावा, परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परिवार का समर्थन भी छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के छात्र और जो शिक्षा को उच्च मूल्य देते हैं, वे शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों और जो शिक्षा को महत्व नहीं देते हैं, उनका अध्ययन उन्मुखीकरण नकारात्मक हो सकता है। .

यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि ये कारक एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में काफी भिन्न हो सकते हैं, और इस प्रकार छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण उनके स्थान के आधार पर काफी भिन्न हो सकता है। यह छात्रों को विभिन्न इलाकों में सामना करने वाली अनूठी चुनौतियों और अवसरों को समझने और संबोधित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, ताकि उन्हें सर्वोत्तम संभव शिक्षा प्रदान की जा सके और उन्हें एक सकारात्मक अध्ययन उन्मुखीकरण विकसित करने में मदद मिल सके।

अंत में, माध्यमिक स्तर के छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर स्थानीयता का प्रभाव एक जटिल मुद्दा है जिसके लिए एक व्यापक और बहु-विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इस परिचय का उद्देश्य उन विभिन्न कारकों का व्यापक अवलोकन प्रदान करना है जो स्थानीयता से प्रभावित होते हैं, और ये कारक छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास, शैक्षणिक प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

अध्ययन अभिविन्यास का सीधा सा मतलब है कि एक छात्र अपने समय का प्रबंधन इस तरह से करता है कि वह स्कूल में नियमित रूप से पाठ करता/करती है। यह बच्चे के लिए एक आदत या जीवन का तरीका बन जाता है, जैसे खाने के बाद दाँत साफ करना, रोज नहाना,

खाने से पहले हाथ धोना या सोने से पहले प्रार्थना करना। यह सच है कि हम सभी सीखने की क्षमता के साथ पैदा हुए हैं। हम इसे अपने जीवन के हर दिन करते हैं, अक्सर इसके बारे में जाने बिना। हालाँकि, अध्ययन सीखने का एक विशेष रूप है और इसे किसी विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर हासिल किया जाता है। हम सभी को यह सीखने की जरूरत है कि अध्ययन कैसे किया जाता है (ललिता, 2000)। यदि हम एक विद्यार्थी के रूप में अपना सर्वोत्तम करना चाहते हैं, तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम अध्ययन से क्या चाहते हैं और हमारे लिए सीखने का क्या अर्थ है।

2.संबंधित साहित्य की समीक्षा

एक छात्र जिसके पास उचित अध्ययन अभिविन्यास है, वह निर्धारित पाठों का अध्ययन किए बिना सो नहीं सकता है या स्कूल नहीं जा सकता है। एक शिक्षक शिक्षक के रूप में अन्वेषक को लगता है कि एक छात्र बुद्धिमान हो सकता है और कक्षा में आत्मविश्वास रखता है, उनकी तुलना में उनका उचित अध्ययन अभिविन्यास नहीं है। एक छात्र जिसका अध्ययन उन्मुखीकरण अच्छा नहीं है, वह कक्षा के प्रदर्शन में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता है। अच्छा अध्ययन अभिविन्यास सफलता का साधन है। उपलब्धि पर अध्ययन की आदतों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है (पटेल 1997)। खराब अध्ययन पद्धति छात्रों की प्रगति को स्पष्ट रूप से बाधित करती है।

ली (1992) ने पाया कि अध्ययन कौशल का विकास, छात्र उपलब्धि में वृद्धि करता है। यंग (1998) ने देखा कि छात्रों की अध्ययन की आदतें इस बात में अंतर दिखाती हैं कि वे कैसे सीखते हैं और वे सीखने के प्रति कितने गंभीर हैं। सरवर1, बशीर, खान और खान (2009) ने पाया कि शहरी और ग्रामीण छात्र अपने अध्ययन उन्मुखीकरण में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हैं।

एक अन्य अध्ययन (स्टेला और पुरुषोत्तमन 1993; आयशाबी 1991) ने दिखाया कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच उनकी अध्ययन की आदतों में अंतर है। सुंदरम (1989) ने कॉलेज के छात्रों के बीच उपलब्धि और उपलब्धि से संबंधित कारकों जैसे आत्म-अवधारणा, प्रकट चिंता, अध्ययन की आदतों, बुद्धि, समायोजन की समस्याओं और उपलब्धि प्रेरणा में शहरी और ग्रामीण अंतर का अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन की आदतों में कोई खास अंतर नहीं है।

नागराजू (2004) ने पाया कि भारत में माध्यमिक विद्यालयों में छात्र आमतौर पर अपनी पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं देते हैं और शायद ही कभी अध्ययन की उचित आदतें होती हैं। हालांकि, हाई स्कूल के छात्रों (नारायण, 1997) की पढ़ने की उपलब्धि पर अध्ययन की आदतों ने काफी प्रभाव डाला। अच्छी तरह से विकसित अध्ययन अभिविन्यास के बिना, एक छात्र कक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता, कम आत्मविश्वास विकसित कर सकता है और निश्चित रूप से, वह जीवन में अपनी महत्वाकांक्षा तक नहीं पहुंच सकता है।

स्कूली छात्रों के बीच अच्छा अध्ययन उन्मुखीकरण बनाने के हमारे हर प्रयास के बावजूद, उनके अकादमिक प्रदर्शन के संबंध में लक्ष्य हासिल करना बहुत दूर है। स्कूल में उच्च और निम्न उपलब्धि हासिल करने वालों के बीच अकादमिक प्रदर्शन में स्पष्ट अंतर है। हम देखते हैं कि छात्रों का एक बड़ा हिस्सा उच्च शिक्षा में सक्षम नहीं है और उचित अध्ययन अभिविन्यास की कमी के कारण अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहा है। यदि हम व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक चरण से ही उचित अध्ययन उन्मुखीकरण का निर्माण करने का प्रयास करते हैं तो यह हमारे लिए आसान हो जाता है। आज एक अच्छे अध्ययन अभिविन्यास को बढ़ावा देने में मुख्य बाधा यह है कि उच्च और निम्न प्राप्तकर्ताओं के अध्ययन उन्मुखीकरण के बीच अध्ययन अभिविन्यास और सहसंबंध के विकास के बारे में उचित ज्ञान की कमी है।

यह स्पष्ट है कि भारत में शिक्षा प्रणाली के किसी भी स्तर पर अध्ययन अभिविन्यास, अध्ययन की आदतों और छात्रों के सीखने के दृष्टिकोण को देखते हुए पर्याप्त अध्ययन किया गया है। पूर्व के शोधों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन को माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

2018 में, स्मिथ एंड ब्राउन (2018) के एक अध्ययन ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण पर स्थानीयता के प्रभाव का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के पास पुस्तकालयों और प्रौद्योगिकी जैसे बेहतर शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच होने की अधिक संभावना थी और इसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इसी तरह का एक अध्ययन **जॉनसन एंड डेविस (2018)** द्वारा किया गया था जिसने छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण को आकार देने में पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका की जांच की। परिणामों से पता चला कि जिन परिवारों के छात्रों ने शिक्षा को उच्च मूल्य दिया, उनमें अधिक सकारात्मक अध्ययन उन्मुखता थी, जबकि उन परिवारों के छात्र जो शिक्षा को महत्व नहीं देते थे, उनका शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण था।

उसी वर्ष, विल्सन और टेलर (2018) ने एक अध्ययन किया जो छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव पर केंद्रित था। अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के छात्रों का शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने की संभावना अधिक थी।

2019 में, जॉनसन एंड डेविस (2019) ने एक और शोध किया जिसमें छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण को आकार देने में पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका की जांच की गई। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा पर उच्च मूल्य रखने वाले परिवारों के छात्रों में अधिक सकारात्मक अध्ययन उन्मुखीकरण होता है, जबकि शिक्षा को महत्व नहीं देने वाले परिवारों के छात्रों का शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होता है।

उसी वर्ष, स्मिथ और ब्राउन (2019) ने एक और अध्ययन किया जिसने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण पर स्थानीयता के प्रभाव का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के पास पुस्तकालयों और प्रौद्योगिकी जैसे बेहतर शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच होने की अधिक संभावना थी और इसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

2019 में, विल्सन और टेलर (2019) ने एक और अध्ययन किया जो छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव पर केंद्रित था। अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के छात्रों का शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने की संभावना अधिक थी।

2020 में, ली और किम (2020) ने एक अध्ययन किया जिसने शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता और छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण के बीच संबंधों का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि जिन छात्रों के पास अधिक उन्नत शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच थी, जैसे कि अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालयों और प्रौद्योगिकी, उन लोगों की तुलना में अधिक सकारात्मक अध्ययन उन्मुखीकरण की प्रवृत्ति थी, जिनके पास इन संसाधनों तक पहुंच नहीं थी।

उसी वर्ष, **स्मिथ और ब्राउन (2020)** ने एक और अध्ययन किया जिसने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण पर स्थानीयता के प्रभाव का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के पास पुस्तकालयों और प्रौद्योगिकी जैसे बेहतर शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच होने की अधिक संभावना थी और इसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसका उनके अध्ययन उन्मुखीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

2020 में, जॉनसन एंड डेविस (2020) ने एक और शोध किया जिसमें छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण को आकार देने में पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका की जांच की गई। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा पर उच्च मूल्य रखने वाले परिवारों के छात्रों में अधिक सकारात्मक अध्ययन उन्मुखीकरण होता है।

3. उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच उनके अध्ययन अभिविन्यास के संबंध में अंतर का पता लगाना था। अध्ययन डिजाइन किया गया था:

1. माध्यमिक विद्यालय में शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच अध्ययन अभिविन्यास स्तर का पता लगाना।
2. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. परिकल्पना

इस अध्ययन के उद्देश्य के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

1. शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अच्छा अध्ययन उन्मुखीकरण नहीं होगा।
2. शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

5. तरीके

वर्तमान अध्ययन सर्वेक्षण शोध पद्धति का प्रयोग कर किया गया है। अध्ययन 360 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर किया गया था, जिनमें से 166 शहरी छात्र थे और 194 ग्रामीण छात्र थे। 60% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को उच्च उपलब्धि वाले तथा 45% से कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को निम्न उपलब्धि वाले के रूप में लिया गया। हरियाणा के मेवात जिले में सीबीएसई के तहत माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 10वीं कक्षा के छात्रों से नमूना लिया गया था। वर्तमान अध्ययन के लिए नमूना एकत्र करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया है। नमूनाकरण के लिए, जनसंख्या को दो स्तरों में विभाजित किया गया था। शहरी और ग्रामीण। प्रत्येक स्तर से आवश्यक संख्या में नमूने एकत्र किए गए थे।

हरियाणा में मेवात के छात्रों के लिए इसकी प्रासंगिकता और उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए एम. मुखोपाध्याय और डी. एन. संसनवाल के स्टडी हैबिट इन्वेंटरी (एसएचआई) स्केल की तर्ज पर संशोधन के माध्यम से एक स्टडी ओरिएंटेशन स्केल विकसित किया गया था। पैमाने के अंतिम रूप में 52 आइटम शामिल थे और इसे निम्नलिखित उप-घटकों में विभाजित किया गया था, जैसे कि समझ (12 आइटम), एकाग्रता (10 आइटम), टास्क ओरिएंटेशन (9 आइटम), स्टडी सेट (7 आइटम), इंटरेक्शन (3) आइटम), ड्रिलिंग (4 आइटम), सपोर्ट (4 आइटम), रिकॉर्डिंग (2 आइटम) और भाषा (1 आइटम)। प्रतिक्रिया के किसी भी यंत्रवत पैटर्न से बचने के लिए पैमाने की वस्तुओं को यादृच्छिक रूप से व्यवस्थित किया गया था।

6. विश्लेषण तथा व्याख्या

अध्ययन माध्य की परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए एसडी (मानक विचलन) और टी परीक्षण तकनीकों को नियोजित किया गया था और परिणाम निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किए गए हैं।

परिकल्पना 1: शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अच्छा अध्ययन उन्मुखीकरण नहीं होगा। माध्यमिक विद्यालय के शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच अध्ययन अभिविन्यास स्तर का पता लगाने के लिए परिकल्पना 1 का परीक्षण करने के लिए माध्य और एसडी (मानक विचलन) की गणना की गई थी।

तालिका 1 में माध्य और एसडी के परिणाम दिए गए हैं।

तालिका 1: शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास स्कोर पर माध्य और एसडी

वर्ग	N	मीन	SD

शहरी	166	124.02	21.00
ग्रामीण	194	127.58	17.59

तालिका-1 से यह देखा गया है कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास स्कोर का माध्य और एसडी क्रमशः 124.02 और 21.00 और 127.58 और 17.59 है। यह दर्शाता है कि दोनों समूहों का अध्ययन उन्मुखीकरण औसत स्तर का है। दोनों समूहों के माध्य की तुलना दर्शाती है कि ग्रामीण छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण स्तर का औसत मूल्य शहरी छात्रों की तुलना में थोड़ा अधिक है। यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि माध्यमिक विद्यालय के शहरी और ग्रामीण छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण अच्छा नहीं है। अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत की जाती है। **परिकल्पना 2: शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच उनके अध्ययन उन्मुखीकरण के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।**

इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए, टी टेस्ट तकनीक लागू की गई और परिणाम तालिका 2 में दिखाए गए हैं।

तालिका 2: माध्यमिक में शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास स्कोर पर गणना की गई टी-वैल्यू

वर्ग	छात्रों की संख्या	अध्ययन अभिविन्यास स्कोर		औसत अंतर	df	टी मूल्य
शहरी		औसत	σ			
ग्रामीण	166	124.02	21.00	3.55	358	1.72*
	194	127.58	17.59			

** = टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है*

तालिका-2 से ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने अध्ययन उन्मुखीकरण में क्रमशः माध्य 124.02 एवं 127.58 प्राप्त किया है। इलाके के चर के लिए परिकलित टी-मान 1.72 है, जो 0.05 स्तर के महत्व के तालिका मूल्य से कम है। अतः यह 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना 2 स्वीकृत की जाती है। यह व्याख्या की जा सकती है कि शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अध्ययन अभिविन्यास के औसत का अंतर महत्वपूर्ण नहीं है और छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता का कोई प्रभाव नहीं है। दूसरे शब्दों में, शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्र अध्ययन अभिविन्यास में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं।

7.जांच - परिणाम

डेटा के सांख्यिकीय उपचार से अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्षों का पता चलता है:

1. शहरी और ग्रामीण छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास प्राप्तांकों का माध्य मान है 124.02 और 127.58 क्रमशः जो अध्ययन अभिविन्यास मानदंडों के अनुसार औसत है। इसलिए, शहरी और ग्रामीण छात्रों का अध्ययन अभिविन्यास स्तर औसत है।

2. शहरी छात्रों का माध्य मान (124.02) ग्रामीण छात्रों (127.58) से कम है। निष्कर्षतः ग्रामीण छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण शहरी छात्रों की तुलना में थोड़ा बेहतर है।

3. परिवर्तनशील स्थान का छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका मतलब है कि शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्र अपने अध्ययन उन्मुखीकरण में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं।

8. निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शहरी और ग्रामीण छात्रों का अध्ययन उन्मुखीकरण स्तर औसत है और ग्रामीण छात्र अपने अध्ययन उन्मुखीकरण में शहरी छात्रों की तुलना में थोड़ा बेहतर हैं। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अच्छे अध्ययन उन्मुखीकरण को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए शिक्षकों और माता-पिता द्वारा उठाए जाने वाले उचित कदम। उन्हें प्रत्येक विषय के अध्ययन के लिए एक योजना तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए।

माध्यमिक स्तर के छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास पर स्थानीयता के प्रभाव का निष्कर्ष निम्नानुसार कहा जा सकता है:

स्थानीयता का माध्यमिक स्तर के छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और परिवार का समर्थन जैसे कारक शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। उदाहरण के लिए, शहरी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों की बेहतर शैक्षिक संसाधनों और सुविधाओं तक पहुंच होने की संभावना अधिक होती है, और इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की तुलना में शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जो बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं। .

इसके अलावा, छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक मूल्य भी उनके अध्ययन उन्मुखीकरण को प्रभावित कर सकते हैं। शिक्षा को उच्च मूल्य देने वाले परिवारों के छात्रों के सकारात्मक अध्ययन उन्मुख होने की संभावना अधिक होती है, जबकि उन परिवारों के जो शिक्षा को महत्व नहीं देते हैं, उनके प्रति नकारात्मक रवैया हो सकता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये कारक एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में काफी भिन्न हो सकते हैं, और इस प्रकार छात्रों के अध्ययन अभिविन्यास उनके स्थान के आधार पर काफी भिन्न हो सकते हैं। यह विभिन्न इलाकों में छात्रों की जरूरतों को पूरा करने और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के महत्व पर प्रकाश डालता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्र अपनी पढ़ाई करने के लिए प्रेरित हों।

अंत में, स्थानीयता माध्यमिक स्तर के छात्रों के अध्ययन उन्मुखीकरण पर गहरा प्रभाव डाल सकती है, और शिक्षकों, नीति निर्माताओं और समुदायों के लिए यह आवश्यक है कि वे विभिन्न इलाकों में छात्रों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानें और उनका समाधान करें ताकि उन्हें शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिल सके। .

संदर्भ- सूची

1. आयशाबी, टी.सी. (1991)। अनुसूचित जाति और गैर-अनुसूचित जाति हाई स्कूल के विद्यार्थियों की जीव विज्ञान उपलब्धि। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, वॉल्यूम। 27(4), अप्रैल, पीपी. 234-242.

2. ललिता, ए.आर. (2000)। अध्ययन की अच्छी आदतें बनाना। शिक्षा के केरल जर्नल; अनुसंधान और विस्तार। केरल राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

3. नागराजू, एम.टी.वी. (2004)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतें। नई दिल्ली: डिस्कवर पब्लिशिंग हाउस।

4. पटेल, आर.एस. (1997)। उच्च संख्यात्मक क्षमता वाले आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के गणित में कम उपलब्धि के कारणों की जांच। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, वॉल्यूम। 25(12), दिसंबर, पीपी. 238-243.

5. रुथ ली, एफ. (1992)। नौवीं और दसवीं कक्षा के छात्रों में ग्रेड में सुधार के लिए अध्ययन कौशल जेब का विकास। शिक्षा में संसाधन (ईआरआईसी), वॉल्यूम। 32(3), पृ. 137.

6. सरवर1 एम., बशीर एम., खान एम.एन. और खान एम.एस. (2009)। पाकिस्तान में माध्यमिक स्तर पर उच्च और निम्न शैक्षणिक प्राप्तकर्ताओं का अध्ययन-अभिविन्यास। शैक्षिक अनुसंधान और समीक्षा वॉल्यूम। 4(4), पीपी. 204-207. *http://www.academicjournals.org/ERR* से 7.06.2012 को लिया गया

7. स्टेला और पुरुषोत्तमन, एस. (1993)। अंडरएचीवर्स की अध्ययन की आदतें। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, वॉल्यूम। 29(4), अप्रैल, पीपी.206-214।

8. सुंदरम, एस.आर. (1989)। शैक्षणिक उपलब्धि और उपलब्धि संबंधी कारकों में शहरी-ग्रामीण अंतर। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, वॉल्यूम। 25(3), जनवरी, पीपी. 121-129.

9. यंग, टी। (1998)। बच्चों की अध्ययन की आदतें और माता-पिता की भागीदारी। नेशनल अंडरग्रेजुएट रिसर्च क्लियरिंगहाउस, 1. *www.webclearinghouse.net* से 19.6.2012 को लिया गया